भारत में संघवाद: उभरती चुनौतियाँ और केंद्र–राज्य संबंधों में परिवर्तन

राजेंद्र कुमार वर्मा, सहायक आचार्य, एस जी एन गर्ल्स कॉलेज, श्री गंगानगर (राजस्थान)

सारांश

भारत का संघवाद संविधान द्वारा निर्धारित ऐसी शासन व्यवस्था है जिसमें केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों एवं उत्तरदायित्वों का विभाजन किया गया है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय संघवाद ने राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप निरंतर परिवर्तन किया है। गठबंधन राजनीति, क्षेत्रीय दलों के उदय, आर्थिक उदारीकरण, वस्तु एवं सेवा कर व्यवस्था, वित्तीय संसाधनों के वितरण तथा राष्ट्रीय नीतियों के क्रियान्वयन ने केंद्र–राज्य संबंधों को नए आयाम प्रदान किए हैं। वर्तमान समय में राज्यों की स्वायत्तता, वित्तीय निर्भरता, राज्यपाल की भूमिका, केंद्रीय एजेंसियों के प्रयोग तथा नीतिगत समन्वय जैसे विषय संघवाद की प्रमुख बहसों के केंद्र में हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारत में संघवाद के बदलते स्वरूप और केंद्र–राज्य संबंधों में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना है। अध्ययन यह रेखांकित करता है कि भारतीय संघवाद को प्रभावी बनाने के लिए सहयोग, समन्वय और संवैधानिक मर्यादाओं का पालन आवश्यक है। मजबूत संघवाद केवल केंद्र की शक्ति से नहीं, बल्कि केंद्र और राज्यों के बीच विश्वास, साझेदारी तथा साझा उत्तरदायित्व से निर्मित होता है।

मुख्य शब्द: भारतीय संघवाद, केंद्र–राज्य संबंध, राज्य स्वायत्तता, सहकारी संघवाद, वित्तीय संघवाद, क्षेत्रीय राजनीति, संविधान